RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-08
August-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

समकालीन भारत और श्रीलंका द्विपक्षीय संबंध: एक विश्लेषण

डॉ. जय कुमार झा

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, के॰ एस॰ कॉलेज, दरभंगा (बिहार)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Aug 2019

Keywords
शक्ति संरचना, नृजातीयता-समस्या, कूटनीतिक परिधि, द्विपक्षीय संबंध, सामरिक महत्व

ABSTRACT

भारत और श्रीलंका के द्विपक्षीय संबंधों का इतिहास 2,500 वर्षों से भी अधिक पुराना है, दोनों देशों की बौद्धिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई संबंधों की विरासत है। हाल के वर्षों में दोनों देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग में महत्त्वपूर्ण प्रगति देखने को मिली है। व्यापार और निवेश के साथ दोनों देशों के बीच अवसंरचना विकास, शिक्षा, संस्कृति तथा रक्षा क्षेत्र सहयोग में वृद्धि हुई है। ये ये अंतर्राष्ट्रीय मामलों के कई महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर व्यापक आपसी समझ साझा करते हैं। ध्यातव्य है कि भारत और श्रीलंका सार्क (SAARC) और बिम्सटेक (BIMSTEC) के सदस्य है और सार्क देशों भारत का व्यापार श्रीलंका के साथ सबसे अधिक है। दिसंबर 1998 में एक अंतर सरकारी पहल के माध्यम से'भारतश्रीलंका - फाउंडेशन' (India-Sri Lanka Foundation) की स्थापना की गई, इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है। इस बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ने भारत की 'पड़ोसी देश प्रथम नीति' या 'नेबरहुड फर्स्ट नीति' (Neighbourhood First Policy) और सागर सिद्धांत (SAGAR Doctrine) के तहत श्रीलंका के साथ भारत के संबंधों को विशेष और उच्च प्राथमिकता)Special and High Priority) देने की बात कही। ध्यातव्य है कि नई विदेश नीति में 'भारत प्रथम दृष्टिकोण' या 'इंडिया फर्स्ट अप्रोच' (India First Approach) को अपनाने और भारत के सामरिक रक्षा हितों की सुरक्षा पर द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती प्रदान किया है।

पृष्ठभूमि-:

भारतश्रीलंका संबंध- भारत और श्रीलंका के बीच राजनयिक संबंध हैं। दोनों ही पड़ोसी देश द्विपक्षीय आर्थिक दृष्टि से भी घनिष्ठ संबंध हैं, क्योंकि यह द्वीप का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और एक उन्नत मंच पर चर्चा के तहत एक एकल बाजार स्थापित करने के लिए एक समझौता भी है। दोनों देशों के बीच गहरे और सांस्कृतिक संबंध हैं। भारत और श्रीलंका एक समुद्री सीमा साझा करते हैं।[1] भारत श्रीलंका का एकमात्र पड़ोसी है, जिसे पाक जलडमरूमध्य द्वारा अलग किया गया है; दोनों देशों ने दक्षिण एशिया में एक रणनीतिक स्थिति पर कब्जा कर लिया है और हिंद महासागर में एक सामान्य सुरक्षा छतरी बनाने की मांग की है। भारत और श्रीलंका दोनों राष्ट्रमंडल राष्ट्र के भीतर गणतंत्र हैं।

हालांकि श्रीलंका के गृह युद्ध और युद्ध के दौरान भारतीय हस्तक्षेप के विवाद से उनका परीक्षण किया गया है। हाल के वर्षों में श्रीलंका विशेष रूप से नौसेना समझौतों के मामले में चीन के करीब चला गया है। भारत ने संबंधों में सुधार के लिए परमाणु ऊर्जा समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत द्वारा वर्ष 2015 में श्रीलंका के साथ परमाणु ऊर्जा समझौता किया।

दोनों पड़ोसी देश कई क्षेत्रीय और बहुपक्षीय संगठनों के सदस्य राष्ट्र हैं जैसे कि दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन , दक्षिण एशिया सहकारी पर्यावरण कार्यक्रम, दक्षिण एशियाई आर्थिक संघ और बिम्सटेक , सांस्कृतिक और वाणिज्यिक संबंधों को बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। एक द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद 2000 में प्रभाव में आया, सन् 2006 तक भारतश्रीलंकाई व्यापार - चौगुना हो गया, और यूएस $ 2.6 बिलियन तक पहुंच गया। वर्ष 2010 में रिकॉर्ड पर द्विपक्षीय व्यापार के लिए सबसे अच्छा वर्ष होने माना जाता है जिसमे पहले सात महीनों में भारत के श्रीलंका के निर्यात में 45% की वृद्धि हुई है भारत का राष्ट्रीय थर्मल पावर कॉरपोरेशन)NTPC) द्वारा सम्पूर में 500 मेगावाट का थर्मल पावर प्लांट बनाने का भी कार्यक्रम है। एनटीपीसी का दावा है कि यह योजना भारत श्रीलंका-के रिश्ते को एक नए स्तर पर ले जाएगी।

श्रीलंका के साथ भारत के संबंध दक्षिण एशिया में किसी अन्य राज्य की तुलना में बेहतर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि भारत ने हिंद महासागर में सामरिक हितों, श्रीलंका में तमिल हितों और अधिकारों की महत्वपूर्ण और विशिष्ट प्राथमिक नीति के तौर पर ध्यान केन्द्रित किया। भारत ने श्रीलंका की ओर तटस्थता और अहस्तक्षेप की नीति बनाई है लेकिन सुरक्षा हितों को बनाए रखने और श्रीलंका की मदद हेतु भारत ने 30 जुलाई 1987 को श्रीलंका में सैन्य हस्तक्षेप किया जो भारत के लिए कठिन निर्णय था। भारत ने 29 जुलाई 1987 को लिट्टे को काबू में करने और जातीय संघर्ष के समाधान हेतु भारत श्रीलंका समझौते के अनुसार श्रीलंका में भारतीय शांति रक्षक बल भेजा था। लेकिन भारतीय शांति रक्षक दल अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया और कई असफलताओं के साथ भारत लौटा जो भारत के लिए दुखद : अंत था।

इसीप्रकार भारत को हमेशा से श्रीलंका में रह रहे तमिलों के अधिकारों हेतु चिंता और सहानुभूति रही है। चूंकि सन् 2009 में लिट्टे जो श्रीलंका में आतंकवाद का परिचायक था, श्रीलंका में शांति वार्ता के

[1] भारतीय उच्च आयोग वेबसाइट, कोलंबो: http://www.hcicolombo.org

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नवीकरण और लिट्टे के खिलाफ श्रीलंका सेना के अभियान को रोकने हेतु भारत सरकार की मध्यस्थता प्राप्त करने का इच्छुक था, लेकिन तत्कालीन भारत सरकार ने इस अवसर पर हस्तक्षेप नहीं किया। भारत सरकार ने केवल तमिलों के कल्याण हेतु रुचि की घोषणा की खासतौर से संघर्ष में बेघर हुए लोगों हेतु (जाफना प्रायद्वीप और उत्तरी प्रांत) किया। श्रीलंका में 18 मई 2009 को श्रीलंका सरकार ने आधिकारिक तौर पर लिट्टे के अंत की घोषणा की। उसके पश्चात् भारत सरकार द्वारा श्रीलंका में काफी पुनर्निर्माण कार्य किए गए हैं। इस प्रकार लिट्टेतर युग में भारत-श्रीलंका के संबंधों में काफी निकटता आयी है। भारत न े बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण हेतु सहायता के रूप में लगभग एक अरब डॉलर प्रदान किए हैं ताकि युद्ध के तीन दशकों के दौरान तबाह हुए बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जा सके। कई भारतीय कंपनियों ने भी इस द्वीप में कई परियोजनाओं में लगभग आधे से एक डॉलर का निवेश किया है। इसके अतिरिक्त भारत ने भारतीय आपात क्षेत्र अस्पताल की स्थापना, सुरंग हटाने की टीमें, 7800 टन आश्रय और छत सामग्री ताकि युद्ध से विस्थापित हुए लोगों की जिन्दगी को पुनः पटरी पर लाया जा सके, भी मदद के तौर पर भेजी थीं।

पर्यटन और सांस्कृतिक संपर्क-:

भारत द्वारा दोनों देशों के बीच बौद्ध संपर्क को मज़बूत करने के लिये श्रीलंका को 15 मिलियन अमेरिकी डॉलर के अनुदान दिये जाने की घोषणा की गई। इस अनुदान का प्रयोग बौद्ध धर्म के क्षेत्र में दोनों देशों के नागरिकों के बीच संबंधों को मज़बूत करने में किया गया था, जिसके तहत बौद्ध मठों का निर्माणनवीकरण/, सांस्कृतिक आदानप्रदान क्षमता -विकास आदि कार्य शामिल हैं।[2] भारत सरकार द्वारा कुशीनगर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहली अंतर्राष्ट्रीय उड़ान के रूप में श्रीलंका के बौद्ध तीर्थयात्रियों के एक प्रतिनिधि मंडल की कुशीनगर यात्रा की व्यवस्था की गई है।[3]

आर्थिक के क्षेत्र में-:

भारत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन के तहत भी साझेदारी की गई है इसके तहत भारत द्वारा श्रीलंका को 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर की एक लाइन ऑफ क्रेडिट की सुविधा प्रदान की गई है। इसके तहत श्रीलंका में 20,000 घरों और 1,000 सरकारी भवनों में सोलर पैनल लगाए जाएँगे। इससे लगभग 60 मेगावाट की सौर विद्युत् ऊर्जा उत्पादन का अनुमान है। भारत द्वारा श्रीलंका में उच्चप्रभाव सामुदायिक विकास -) परियोजनाHigh Impact Community Development Projects- HIDP) को अगले 5 वर्षों वर्ष)2025) के लिए बढ़ा दिया गया है।

वर्ष 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री की श्रीलंका यात्रा के दौरान की गई थी। इस परियोजना के तहत 10,000 घरों के निर्माण कार्य को पूरा किया जाएगा, इस योजना से सबसे अधिक लाभ बागानों में कार्य करने वाले श्रमिकों को प्राप्त होगा। इससे पहले भी भारत द्वारा जाफना में 50,000 घरों का निर्माण किया गया था। इसके साथ ही दोनों देशों के बीच कृषि, पशुपालन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल और आयुष)AYUSH) के क्षेत्रों में तकनीकी सहयोग को बढ़ाने और इन क्षेत्रों से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करने पर सहमति व्यक्त की गई।

सामरिक महत्व :-

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में श्रीलंका सामरिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक दृष्टि से भारत का एक अहम पड़ोसी देश है। चूंकि हिन्द महासागर में भारत के निकट होने के कारण सैनिक एवं सामरिक दृष्टिकोण से श्रीलंका का भारत के लिए अत्यधिक महत्व है।[4] भारत और श्रीलंका के सांस्कृतिक संबंध सदियों प्राचीन हैं। श्रीलंका हिंद महासागर में अवस्थित भारत के दक्षिण में स्थित एक द्वीपीय देश है। भारत और श्रीलंका के मध्य पाक जलडमरूमध्य एक विभाजनकारी आभासी लकीर है। श्रीलंका के साथ संबंधों में मजबूती भारत के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

चीन का प्रतिस्पर्धात्मक प्रभाव:

पिछले कुछ वर्षों में चीन ने श्रीलंका में भारी मात्रा में निवेश मुख्य रूप)से अवसंरचना परियोजनाओं मेंकिया है (, इसे साथ ही चीन ने अन्य कई परियोजनाओं के लिये अरबों डॉलर का ऋण भी उपलब्ध कराया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2008 से वर्ष 2012 के बीच श्रीलंका द्वारा लिये गए कुल विदेशी उधार में से 60% चीन से आया था। ध्यातव्य है कि वर्ष 2017 में चीन ने श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह को 99 वर्षों के लिये की लीज़ पर ले लिया था हिंद महासागर में श्रीलंका की अवस्थिति रणनीतिक रूप से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और श्रीलंका इस तथ्य से भलीभांति परिचित भी है। इसके साथ ही वह चीन तथा भारत दोनों के साथ अपने संबंधों को बनाए रखना चाहता है।[5]

पिछले कुछ वर्षों में चीन ने हिंद महासागर और आसपास के -(पाकिस्तान) ग्वादर] क्षेत्रों में बंदरगाहों, चटगाँव बांग्लादेश), क्युक फलू के माध्यम से अपनी [(श्रीलंका) और हम्बनटोटा (म्यांमार) स्थित ि को मज़बूत करने का प्रयास किया है। अतः हिंद महासागर को चारों तरफ से घेरने की चीन की योजना में श्रीलंका की नीतियों का कहीं अधिक योगदान है ,जो भारत के लिए एक चिंता का विषय है। भारत की चिंता यह रही है कि हिंद महासागर मसलन श्रीलंका और मालदीव में चीन का वर्चस्व बढ़ता है तो इससे भारत के साथ उनके द्विपक्षीय संबंधों

---

[2] The Week, "Sri Lanka says Buddhism's foremost place will be preserved in new Constitution", 11 January 2019, https://www.theweek.in/news/world/2019/01/11/sri-lanka-says-buddhism-will-be-preserved-in-new-constitution.html.Accessed on July 2 2019.

[3]मधुमिता,(2012).''बदलते वैश्विक सामरिक परिप्रेक्ष्य में भारत'', समकालीन भारतएक - परिचय, (सम्पामनोज सिन्हा (, नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वान पृ .357.

[4] मधुमिता,(2012).''बदलते वैश्विक सामरिक परिप्रेक्ष्य में भारत'', समकालीन भारतएक - परिचय, (सम्पा मनोज (सिन्हा, नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वान पृ .358.

[5] दलीप बाजिया,(अक्टूबर, .''एक मूल्यांकन : भारत सुरक्षा कश्मकश-चीन'' .(2014 वर्ल्ड फ़ोकस, पृ .19.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पर ही प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि दक्षिण एशियाई देशों का समूह सार्क भी उलझन में पड़ जाता है।[6]

भारत-:श्रीलंका वर्तमान संबंध-

मोदी सरकार ने अपने रणनीतिक साझेदारों में से एक श्रीलंका के साथ रिश्तों सुधारने के लिए तेजी दिखाई है और जोर शोर से काम किया है। महिंदा राजपक्षे जब श्रीलंका के राष्ट्रपति थे, तब भारत के साथ उसके संबंधों को झटका लगा था। हालांकि, 2014 के बाद दोनों देशों ने कई स्तर पर एक दूसरे के यहां यात्रा करके राजनीतिक संपर्क बढ़ाया है। श्रीलंका के साथ भारत के रिश्तों का सांस्कृतिक आयाम भी रहा है।[7] भारत वहां रामायण ट्रेन और अपने देश में बौद्ध सर्किट तैयार कर रहा है। मई 2017 में अंतरराष्ट्रीय वैसाक दिवस पर मोदी ने दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों की ओर ध्यान दिलाया था। बुद्ध धर्म पर अपने संदेश के जरिये उन्होंने श्रीलंका के साथ रिश्तों को तमिल राजनीति से अलग करने की कोशिश की थी। वह इसे सांस्कृतिक आयाम देना चाहते थे।[8] यह सच है कि श्रीलंका के साथ भारत के आर्थिक संबंध मज़बूत नहीं रहे हैं। कई द्विपक्षीय यात्राओं के बावजूद इस मामले में बहुत प्रगति नहीं हुई है। वर्ष 2017 में भारत और श्रीलंका के बीच सहमति पत्र पर दस्तख़त हुए थे, जिसमें भविष्य के लिए रोडमैप की बात थी, इसमें आर्थिक संबंधों को मज़बूत करने, श्रीलंका में भारतीय निवेश को बढ़ावा देने और आर्थिक साझेदारी के लिए पहल की बात थी।[9]

हालांकि, इस मामले में बहुत प्रगति नहीं हुई है। फिशरीज पर संयुक्त कार्यबल के गठन और दोनों देशों के तटीय रक्षकों के बीच हॉटलाइन स्थापित होने के बावजूद इंटरनेशनल मैरिटाइम बाउंड्री लाइन आई).एम.बी.एलके उस पार भारतीय मछुआरों की गिरफ्तार की (समस्या खत्म नहीं हुई है।

ध्यातव्य है कि बीते वर्ष जब श्रीलंका के राष्ट्रपति गोतबाया राजपक्षे)Gotabaya Rajapaksa) भारत के दौरे पर आए थे, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीलंका के लिये 450 मिलियन डॉलर के लाइन ऑफ क्रेडिट (Line of Credit) की घोषणा की थी। विशेषज्ञों ने भारत सरकार के इस निर्णय को 'संबंध मज़बूत करने के सक्रिय दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया था। आँकड़ों के अनुसार, श्रीलंका ने अब तक भारत से कुल 960 मिलियन डॉलर का क़र्ज़ लिया है, उल्लेखनीय है कि हालिया मुद्रा विनिमय समझौता भी इसी ऋण से संबंधित एक उच्च स्तरीय बैठक के बाद लिया गया है।

विदित हो कि बीते ही वर्ष श्रीलंका ने भारत और जापान के साथ कोलंबो बंदरगाह पर ईस्टर्न कंटेनर टर्मिनल)East Container Terminal) बनाने को लेकर एक समझौता किया था। तीनों देशों ने संयुक्त रूप से कोलंबो बंदरगाह पर ईस्ट कंटेनर टर्मिनल के निर्माण पर सहमति व्यक्त की थी। हालाँकि कोलंबो बंदरगाह पर स्थिति इस परियोजना को लेकर हो रहे विरोध के चलते श्रीलंका ने अभी तक कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया है।[10] श्रीलंका में आज भी लोकप्रिय तमिल नेता तमिल प्रश्न के लंबित राजनीतिक समाधान पर भारत का आह्वान करते हैं। गौरतलब है कि भारत ने वर्ष 1983 में श्रीलंकाई तमिलों और बहुसंख्यक सिंहलियों के बीच हुए गृह युद्ध में सक्रिय भूमिका निभाई थी और श्रीलंका के संघर्ष को एक राजनीतिक समाधान प्रदान करने के लिये वर्ष 1987 में भारतश्रीलंका-समझौते पर हस्ताक्षर भी किये गए थे।

निष्कर्ष-:

भारत और श्रीलंका के मध्य एक साझा संस्कृति है जो दोनों देशों को एक साथ जोड़ने का कार्य करती है। दक्षिण एशिया में महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय हितों के साथ एक प्रमुख एशियाई राष्ट्र होने नाते के भारत पर अपने निकटतम पड़ोस में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने की विशेष ज़िम्मेदारी है। जानकारों का मानना है कि राजपक्षे परिवार चीन का समर्थक ज़रूर है, परंतु वे भारत विरोधी नहीं है। पड़ोसी होने के नाते भारत और श्रीलंका दोनों को विकास के लिये एक दूसरे के सहयोग की आवश्यकता होगी। अतः आवश्यक है कि भारत और श्रीलंका एक मंच पर आकर विभिन्न मुद्दों पर विचार कर अपने द्विपक्षीय संबंधों को और मज़बूत करने का प्रयास करें।

सुझाव-:

- भारत को श्रीलंकाई तमिलों के हितों की रक्षा हेतु संविधान संशोधन जैसी घटनाओं पर नज़र रखनी होगी साथ ही उन्हें मुख्य धारा के जोड़ने में सहयोग के रूप में शुरू की गई विकास योजनाओं को निर्धारित समयसीमा में पूरा करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।
- वर्तमान में श्रीलंका बौद्ध धर्म की थेरवाद शाखा का केंद्र बन गया है, साथ ही भारत और श्रीलंका को एक सूत्र से जोड़ने में बौद्ध धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान है, ऐसे में भारत सरकार द्वारा बौद्ध धर्म के माध्यम से दोनों देशों के नागरिक संबंधों को मज़बूत करने का प्रयास किया जाना चाहिये।
- दोनों देशों के बीच मछुआरों से जुड़े विवाद पर मिलकर स्थायी समाधान का प्रयास किया जाना चाहिये।
- श्रीलंका नेतृत्व ने कई मौकों पर भारतीय निजी कंपनियों द्वारा श्रीलंका में निवेश की इच्छा जाहिर की है श्रीलंका के सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के साथ अन्य क्षेत्रों में उपलब्ध संभावनाओं को

[6] Gupta, Madhu,(may - 2019). India-Sri Lanka Relationship: The thread of the relationship gets stronger ISSN: 2249-894X impact factor : 5.7631(UIF).UGC approved Journal No. 48514.volume - 8 issue - 8

[7] Reemoy Talukdar, (12 May 2017)."Narendra Modi in Sri Lanka: PM is transforming India's foreign policy through soft power and cultural diplomacy," *Firstpost*,

[8] The Week, "Sri Lanka says Buddhism's foremost place will be preserved in new Constitution", 11 January 2019, https://www.theweek.in/news/world/2019/01/11/sri-lanka-says-buddhism-will-be-preserved-in-new-constitution.html.Accessed on July 2 2019.

[9] राष्ट्रीय सहारा,मई 14 , .2017

[10] Husanjot Chahal, (28 June 2017) "India-Sri Lanka: Reorienting the Relationship?" Institute of Peace and Conflict Studies, 28 June 2017.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

देखते हुए निवेश के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत करने का प्रयास किया जाना चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. भारतीय उच्च आयोग वेबसाइट, कोलंबो: http://www.hcicolombo.org/
2. मधुमिता,(2012).''बदलते वैश्विक सामरिक परिप्रेक्ष्य में भारत'', समकालीन भारतएक परिचय-, (सम्पामनोज सिन्हा (, नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वान पृ .357
3. दलीप बाजिया,(अक्टूबर, .''एक मूल्यांकन : भारत सुरक्षा कशमकश-चीन'' .(2014 वर्ल्ड फ़ोकस, पृ .19.
4. राष्ट्रीय सहारा,मई 14 , 2017
5. Reemoy Talukdar, (12 May 2017)."Narendra Modi in Sri Lanka: PM is transforming India's foreign policy through soft power and cultural diplomacy," *Firstpost*,
6. Husanjot Chahal, (28 June 2017) "India-Sri Lanka: Reorienting the Relationship?" Institute of Peace and Conflict Studies, 28 June 2017.
7. Gupta, Madhu,(may - 2019). India-Sri Lanka Relationship: The thread of the relationship gets stronger ISSN: 2249-894X impact factor : 5.7631(UIF).UGC approved Journal No. 48514.volume - 8 issue - 8
8. https://www.youtube.com/watch?v=-dLkbYRJbwk
9. https://www.orfonline.org/people-expert/kriti-m-shah/
10. http://mea.gov.in/Portal/ForeignRelation/Sri_Lanka_Jan_2015_hi.pdf जनवरी, 2015